ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 71-75**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

आचार्य चतुरसेन के उपन्यासों में नारी का स्वरूप

डॉ0 पूर्णिमा पाण्डेय

असि० प्रोफे० – हिन्दी विभाग, कन्या महाविद्यालय आर्य समाज, भूड़ – बरेली (उ0प्र0) भारत

Received-14.08.2025, Revised-22.08.2025, Accepted-29.08.2025 **E-mail : aaryvart2013@gmail.com**

सारांशः ***हिन्दी साहित्य के उपन्यास में आचार्य चतुरसेन शास्त्री का स्थान उनकी बहुआयामी प्रतिभा के कारण अप्रतिम है। पिछले सौ वर्षों के इतिहास में हिन्दी साहित्य के जगत में ऐसा कोई दूसरा लेखक नहीं हुआ, जिसने साहित्य की सभी विधाओं पर कलम चलाते हुए साहित्येतर एक दर्जन विषयों पर अपनी छाप छोड़ी हो, साहित्येतर से मेरा प्रयोजन आयुर्वेद, राजनीति, धर्मशास्त्र, कामकला, शिक्षा शास्त्र, इतिहास, संस्कृति, खग्रास, पाकशास्त्र आदि से है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री स्वयं आर्य समाजी थे, इस कारण आर्य समाज के विचारों तथा सिद्धांतों का समर्थन उन्होंने व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक दोनों रूपों में मुक्त कण्ठ से किया है। उनके विचार स्वछन्द होकर नारी समस्याओं के लिए विशेषकर अभिव्यक्त हुए हैं। वह भले ही यथार्थ के धरातल की वस्तु न होकर कल्पना की वस्तु हो, किन्तु ह्रदय उनके द्वारा किए गए नारी पात्रों के प्रति करुणा और सहानुभूति से पूर्ण हो उठता है। नारी के प्रति उनके ह्रदय में दर्द है, तड़प है, वह सच्चे ह्रदय से यही चाहते थे, कि युग से तड़पती और सिसकती बन्धनग्रस्त नारी समाज के प्रतिष्ठित समाज सुधारको, पाठकों तथा जनसाधारण तक पहुंचा दूँ, जिसमें वह सफल हुए हैं। कम से कम यह विचार उत्पन्न कराने में तो अवश्य सफल हुए हैं, कि हमारे समाज की नारी कितनी त्रस्त है।***

कुंजीभूत शब्द– **महिला सशक्तिकरण, जागरूकता निर्माण, सहभगिता, क्षमता विकास, संचेतना, सम्मान, संरक्षा, संवेदनशीलता।**

चतुरसेन शास्त्री के उपन्यासों पर विशद दृष्टि डालकर यह देखने का प्रयास जरूर करेंगे, कि लेखक ने नारी सम्बंधित सामाजिक समस्याओं को उपन्यास में स्थान दिया है तथा वह समस्या सुलझाव में कहाँ तक सहयोगी सिद्ध हो चुकी हैं। यह आवश्यक नहीं कि समस्या का समाधान लक्ष्य में रखकर उपन्यास की रचना की गई हो। किन्तु इतना अवश्य है कि समस्या का समाधान न मिलने पर मन कौतूहल से भर उठता है, जिज्ञासा का बीजोरोपण होता है। पढ़ने वाला पाठक स्वयं स्थितियों में प्रवेश कर कुछ सोचने के लिए कटिबद्ध हो जाता है। किसी–किसी उपन्यास में हमें समस्या का समाधान नहीं मिलता है। शायद उपन्यासकार पाठकों के लिए उन समस्याओं के सुलझाव का बोझ छोड़ देता है, किन्तु यह कहा जा सकता है। आचार्य जी मर्यायवादी आदर्शोन्मुख उपन्यासकार थे। उपन्यासकार चतुरसेन ने भारतीय इतिहास के पुरातन युग से लेकर वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र तक कार्य करने वाली नारियों का चरित्र चित्रण किया है। उनके प्रायः सभी उपन्यास (सहाद्रि की चहाने और लाल पानी आदि एक दो अपवाद को छोड़कर) नारी केन्द्रित है। उनके अधिकतर ऐतिहासिक उपन्यास किसी महती ऐतिहासिक घटना पर आधारित है। फिर भी उनमें वर्णित महान घटनाओं के गति चक्र में किसी न किसी नारी का स्थान बहुत महत्वपूर्ण रहा है उदाहरण के लिए ह्रदय की परख, ह्रदय की प्यास, बहते आँसू, आत्मदाह, नीलमणि, दो किनौर, अपराजिता, अदल–बदल, आभा और पत्थर युग के दो बुत आदि सामाजिक उपन्यास तो जीवन की हल्की–गहरी रेखाओं पर निर्मित है, पूर्णाहुति, सोमनाथ तथा आलमगीर आदि ऐतिहासिक उथल–पुथल से सम्बंधित उपन्यासों में भी नारी का अस्तित्व बहुत निर्णायक रहा है। इसके अतिरिक्त वैशाली की नगरवधु, देवांगना और गोली जैसे इतिहास रस सम्बंधी उपन्यासों के तो शीर्षक ही उनकी विशिष्ट नारी–दृष्टि के परिचायक हैं।

आचार्य चतुरसेन कृत उपन्यासों में मनः स्थिति के आधार पर नारी–पात्रों का वर्गीकरण किया है। आचार्य चतुरसेन के बत्तीस में से उन्नीस सामाजिक उपन्यास हैं। इन सामाजिक उपन्यासों में पचपन नारी पात्र प्रमुख हैं। और छह उल्लेखनीय गौण पात्र हैं। लेखक ने समाज में वर्तमान नारी समस्याओं को इन पात्रों के माध्यम से उठाया है। इन समस्याओं में विवाह सम्बंधी, प्रेम और काम सम्बंधी, आर्थिक, स्वाधीनता एवं अन्य अधिकार सम्बंधी तथा कुछ स्फुट समस्याएँ हैं। समस्याओं के अनुसार विभिन्न प्रकार की नारियों का चरित्र – चित्रण होना स्वभाविक है। आधुनिक काल में हमारे समाज में जागरूक नारियाँ हैं। यहाँ परम्परावादिनी और प्रवंचिताओं की भी कमी नहीं हैं, अतएव इन नारियों को विभिन्न उपवर्गो में बाँटना आवश्यक है। जैसे : 1. शोषिता, 2. वेश्याएँ, 3. आसाधारण नारियाँ, 4. स्वछन्द विलासिनी नारियाँ, 5. स्वाभिमानिनी नारियाँ, 6. पीड़ित नारियां, 7. योद्धा नारियाँ।

शोषिता –

1. गुलिया (अपराधी) – गुलिया ग्रामीण वैश्य परिवार की बहु है, वह बहुत छोटी उम्र में विवाहिता होकर उस घर में आती है। सास शीघ्र ही परलोक सिधार जाती है। ससुर कम्पवात कारोगी है पति निखट्दू और व्यसनी है यहाँ तक कि वह लुच्चे, बदमाश यारों के लिए पत्नी तक पहुँचने का मार्ग सुलभ कर देता है, किन्तु संयोगवश गुलिया सुरक्षित रह जाती है। इस प्रकार गुलिया का जीवन – विकास अत्यन्त विषम परिस्थितयों में होता है। पति के चोरी के मामले में फंसकर घर से भाग जानेपर वह और भी कठोर परिश्रम करके बूढ़े ससुर और नन्ही पुत्री का पालन करती है। उसका पति चोरी का माल घर पर ले आता है वह स्पष्ट रूप से उसकी निन्दा करती है, किन्तु पति के हिंसक स्वभाव के कारण उसे चुप रहना पड़ता है। पुलिस सन्देह का सूत्र प्राप्त कर उनके घर की तालाशी लेने पहुँचती है। गुलिया झूठ बोलकर पति की आन बचाने का प्रयास करती है किन्तु ससुर को पुलिस द्वारा प्रताड़नादेने पर वह सबकुछ सत्य बता देती है।

उपन्यास के अन्तिम अंश में गुलिया के चरित्र का दूसरा पक्ष देखने को मिलता है, वह युवापुत्री के साथ अनैतिकता के व्यवसाय में ग्रस्त दिखाई पड़ती है, वर्षों की लोक प्रताड़ना तथा उपेक्षित जीवन की विभीषिकाएँ उसे इस दलदल में ला फेंकती है। परिस्थितियों की विषम तरंगे उसके पति को पुनः, उसके द्वार पर ला पटकती है। वह औपचारिक मर्यादा पालन के अतिरिक्त उसकी कोई सेवा नहीं कर पाती। माँ–पुत्री को कुपथ पर देखकर उसका पति जाने लगता है। वह एक बार भी उसे रोकने का प्रयास नहीं करती है। गुलिया पुरुष – समाज के कुचक्रों में फँसी समान्य नारी है।

अनाम नारी (नरमेध) – यह एक फाँसी की सजा पायी गई स्त्री की असाधारण कहानी है, "नारी एकनिष्ठ प्रेम, क्षमा, त्याग और सहिष्णुता की मूर्ति होते हुए भी जब अपने प्रति होने वाले अन्याय की चरम सीमा देखती है तब उसके प्रतिशोध की ज्वाला के सन्मुख ज्वालामुखी पर्वत भी टिक नहीं पाते यह उपन्यास का कथ्य है। नगर के प्रसिद्ध एडवोकेट–जनरल गोपाल दास समाज के

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

संभ्रान्त नागरिक होकर भी अज्ञातनामा परस्त्री के प्रति आसक्त हैं। वह स्त्री ग्रहस्थ है, परन्तु इन दोनों के योग से एक अवैध सन्तान का जन्म होता है वह स्त्री कलंकिता होने के प्रतिशोध–भावनावश गोपाल दास की हत्या कर पुलिस को आत्मसमर्पण कर देती है। अदालत से उसे मृत्युदण्ड मिलता है।

चम्पा (गोली) – चम्पा उपन्यास की प्रधान पात्री है जो अपने दाता की बेटी कुवंरी के विवाह में दहेज में दी जाती है। कुवेरी के पति अपनी विवाहिता के पास न जाकर चम्पा के पास चले जाते हैं। चम्पा के लोभ में ठाकुर को कुंवरी को विमुख कर दिया। समाचार पाते ही कुवँरी ठाकुर से कभी न मिलने की सौगन्ध खा लेती है। चम्पा राजा के औरस से पाँच सन्तानों की माँ बनती है। किन्तु राजा केवल भोग का ही सम्बंधी होता है असली पिता किसुन नाम का गोला करार दिया जाता है जिसको स्पर्श चम्पा केवल विवाह के अवसर पर करती है, चम्पा की सन्तानें किसुन गोले की सन्तान के रूप में दर–दर भटकती है। चम्पा के दुर्भाग्य का अन्त यहाँ नहीं होता। लाल जी ख्बास की ईर्ष्या और षड्यन्त्र से वह महाराजा के कोप का भाजन बनती है, परिणामस्वरूप वह इयोढ़ियों के नरकीय जीवन को भोगती है। स्वतन्त्रता पश्चात भारतीय रियासितों के विलय के अवसर पर उस जीवन से इसकी मुन्ति होती है इस बीच महाराजा और किसुन मर जाते हैं। तथापि अन्य मानवों की भांति स्वतन्त्र वायुमण्डल में साँस लेने का अवसर मिलने पर वह प्रसन्न होती है।

चम्पा न सिर्फ अपनी कहानी है। बल्कि सभी स्त्रियों की कहानी है। जो सामाजिक रूप से उपेक्षित शोषित और कंलकित रही हो। उसकी पीड़ा, संवेदनाएँ उसकी मौन चीखे उन महिलाओं की सामान्य पीड़ा की अभिव्यक्ति है।

भगवती की बहु (ह्रदय की व्यास) – यह प्रवीण के मित्र भगवती की पत्नी है। इसके पति का मित्र प्रवीण इसके सौन्दर्य – रस का पान करने के लिए इसे अपनी कामवासना का शिकार बनाना चाहता है। प्रवीण के आर्कषण की आग में इसकी चंचलता और अल्हड़पन घी का काम करते हैं वह प्रवीण को घर आने को मना करती है एकान्त पाकर प्रवीण उसके घर आ जाता है। प्रवीण को अनेक प्रकार से दुत्कारते हुए वह उसके निकट आ जाती है। दुर्भाग्यवश उस समय अचानक पति के आने पर यह पतिता घोषित कर दी जाती है। पति के दुत्कारने पर वह मरना चाहती है। परिस्थितियों इसे अपने नन्हें शिशु सहित प्रवीण के द्वार पर ले जाती है। प्रवीण अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए इसे अपनी धर्म बहिन मान लेता है। और इसकी सेवा में अपना जीवन समर्पित कर देता है, यह एक सन्यासी के आश्रम में रहकर साध्वी का जीवन व्यतीत करती हैं।

शशिकला (ह्रदय की परख) – शशिकला पुरुष–समाज द्वारा प्रवंचित नारी है। वह सहज अनुरागी है। किशोरावस्था में उसे भूदेव जैसा विद्वान, सह्रदय शिक्षक का साथ मिलता है। वह उसे अपना सर्वस्व सौंप देती है, और उसके साथ चली जाती है। अविवाहिता अवस्था में ही माँ बनकर पुत्री (सरला) को जन्म देती है। कुछ समय पश्चात भूदेव सरला को लेकर वापस चला जाता है। शशिकला घर लौट आती है। इसका अन्य पुरुष से विवाह हो जाता है। नए परिवार में शशिकला माँ रूप में अपनी ममतामयी प्रकृति का परिचय देती है। अवैध पुत्री सरला को बीस वर्षों के बाद देखकर उसका ह्रदय स्नेह से भर जाता है, वह सरला से अपने साथ चलने का आग्रह करती है लेकिन सरला साथ जाने को मना कर देती है। अन्त में वह पति से क्षमा के लिए निवेदन कर परलोक सिधार जाती है। समाज में शशिकला जैसी भूल करने वाली नारियों का यही परिणाम होता ळें

वेश्याएँ (केसर) – केसर वेश्या है, किन्तु यह समान्य वेश्याओं से भिन्न है। यह शरीर विक्रय नहीं करती है, केवल गायन से ही यह खास खास लोगों का मनोरंजन करती है, यह अपने पास आने वाले लोगों को शराब के पैग पर पैग भरकर पिलाती है, किन्तु स्वंय कभी भी प्याला अपने मुहं से नहीं लगाती है यह सब कार्यक्रम उसके घर के बाहरी बैठक में चलता है। एक बार दो रईसों के साथ जाते हुए एक युवक (उपन्यास का नायक नरेन्द्र) उसकी मोटर से टकराकर घायल हो जाता है, वेश्या केसर उसे अपने घर ले जाती है। कुछ सचेत और स्वस्थ्य होने पर वह घर से जाने लगता है। वह आग्रह करके उसे रोक लेती है। नरेन्द्र की जीवन गाथा सुनकर उसे स्थायी ठिकाना न मिलने तक वहाँ रहने को कहती है। परिवार हीन इस युवती को नरेन्द्र के रूप में भाई के दर्शन होते हैं। नरेन्द्र सुधा के मिल में काम करते हुए कैलाश और रमेश के षड्यन्त्र में फंसकर जेल पहुंचने पर केसर अपनी सूझ–बूझ से उन घूर्तों से महत्वपूर्ण दस्तावेज प्राप्त कर सारे मुकदमें का पासा पलट देती है।

बी हमीदन (खून और खून) – बी हमीदन अमृतसर की प्रसिद्ध वेश्या है, पहले यह गायिका के रूप में अपने भाई हमीद के साथ सुख और शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कर रही थी। परिस्थितियाँ इसे धीरे–धीरे वेश्यापथ पर डाल देती है। भारत–विभाजन के समय इसे लाहौर जाना पड़ता है। इसका भाई अमृतसर में कहीं रह जाता है। हमीदन स्नेह–शील बहिन भी है। अमृतसर में स्वंय नाच–गाकर अपना जीवन निर्वाह करती है। किन्तु अपने भाई की शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध करती है उसकी खोज करती हुयी वह नबाब ननकू के जाल में फंसती है। भाई से मिलने के उमंग में यह श्री नगर तक चलती जाती है। अन्त में केशव की माँ के साथ पठान कोट लौटने पर केशव के साथ हमीद को देखने पर आनन्द विभोर हो जाती है।

जोहरा सर्वत्र आत्म–अस्तित्व की रक्षिका समर्थ नारी सिद्ध होती है।

जोहरा (मोती) – जोहरा (मोती) जोहरा कलकत्ता की वेश्या है। यह दिल्ली के शाह–दिल किन्तु बिगड़े रईस खान बहादुर नबाब नियाज अहमद की रखैल है। जोहरा अज्ञातकुलीन हिन्दु बाला है। वेश्यापन उसे माँ से विरासत में मिला है। यह जीवन में केवल दो व्यक्तियों को अपनाती है प्रेमी के रूप में हंसराज को, सरपरस्त के रूप में नबाब नियाज अहमद को। जोहरा का बहिन रूप उज्जवलतम् है।

इसका छोटा भाई मोती मामा के पास गाँव में था। यह माँ की मृत्यु के उपरान्त इसे अपने आप पास' कलकत्ता बुला लेती है। वह स्वयं पढ़ी नहीं थी, लेकिन मोती को उच्च शिक्षा दिलाने में वह कोई कसर नही छोड़ती। एक बार मोती रामप्रकाश से लिए रुपये न लौटा कर, अदालत में झूठ बोलकर उल्टे उससे खर्च के तीन रुपये ले लेता है। इस पर जोहरा मोती को कटुवचन बोलती है। जोहरा का चरित्र सामाजिक कुत्सा की गुदड़ी मे छिपे नारी रत्न की आभा से मण्डित है।

आसाधारण नारियाँ – कुण्डनी (वैशाली का नगरवधु) : यह एक रहस्यमयी विषकन्या है जन्म से मृत्यु तक इसका सारा जीवन अलौकिक अतिमानवीय तत्व से युक्त दिखाई देता है। यह आचार्य शाम्बव्य कश्यप की पुत्री है। मंत्रपूत सर्पदंशो द्वारा इसके समूचे शरीर को विषधर में बदल दिया था। इसका मोहक रूप विष संचार के प्रभाव से सच्चे अर्थों में मायावी और घातक बन जाता है। अपने विषैले चुम्बन से वह चम्पा नरेश दधिवाहन और शम्बर असुर का ससैन्य विनाश कर सोमप्रभ के माध्यम से सभी राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति करती है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

शोभना (सोमनाथ) : शोभना के चारित्र को पूर्णतः मानवीय धरातल पर चित्रित करते हुए उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि नारी की महानता को विश्व का बड़े से बड़ा शक्तिशाली पुरुष भी स्पर्श नहीं कर सकता । सोमनाथ महालय के अधिकारी एवं तान्त्रिक कृष्णस्वामी की यह बाल–विधवा कन्या प्रेम, सेवा, त्याग, और वीरता की जीती–जागती मूर्ति है। यह एक ओर प्रिय के अनुराग की वेदी पर यह धर्म और नैतिकता का बलि चढ़ाने को तत्पर हो जाती है। तो दूसरी और राष्ट्रीय–कर्तव्य के निर्वाह–हेतु अपने उसी अनुराग का गला घोटने से नहीं हिचकिचाती। किंतु प्रत्येक स्थिति में वह अपने जीवन से बहुत प्यार करती है। वह आठ वर्ष की आयु में व्याही गई और एक ही वर्ष बाद विधवा हो गई। फिर भी वह बड़े ठाठ–बाट से रहती है। उसके ह्रदय में जाति, धर्म समाजगत भेद भाव का कोई स्थान नहीं था।

अम्बपाली (वैशाली की नगर वधु) : अम्बपाली (वैशाली की नगरवधू) अवैध सन्तान है, अप्रतिम सुन्दरी होने के कारण वह वैशाली के राज्य–नियमानुसार 'नगरवधू' बनती है। अपने नारीत्व को इस प्रकार सार्वजनिक बना दिये जाने पर उसके ह्रदय में प्रतिहिंसा की ज्वाला फूटती है। अम्बपाली एक नारी है। अतएव वह स्त्रीत्व या पत्नीत्व की आकांक्षा से मुक्त नहीं है। वह अपने जीवन में समय–समय पर कई पुरुषों के साथ वास्तविक प्रेम करने का प्रयास करती है। इनमें चार प्रमुख हैं हर्षदेव, बिम्बसार, उदयन और सोमप्रभ। हर्षदेव उसके नगर वधू बनने पर अज्ञात हो जाता है। सोमप्रभ संयोगवश उसका सहोदर ही है। दोनों सोमप्रभ तथा अम्बपाली, इस वास्तविकता से परिचित होने पर सम्भवतः भिक्षु धर्म स्वीकार कर लेते हैं। इस प्रकार अम्बपाली वास्तव में एक विलक्षण नारी है।

महारानी एलिजावेथ (सोना और खून) : इंग्लैंड की 'कुमारी रानी' के नाम से प्रसिद्ध सम्राज्ञी एलिजाबेथ के चरित्र के अंतरंग एवं बहिरंग पक्ष स्पष्टतः भिन्न है। अंतरंग रूप में यह यौन कुण्ठित, अभुक्त काम वासना की शिकार, नारी, सुलभ ईर्ष्या और प्रतिशोध–भावना से युक्त नारी है। बहिरंग में यह अधिकार प्रिय दबंग, बुद्धिमती, निडर, दूर–दर्शिनी तथा समन्वयवादिनी शासिका सिद्ध होती है।

महारानी एलिजाबेथ एक ऐतिहासिक और प्रभावशाली महिला शासक थी। उन्होंने न केवल इंग्लैंड को एक नई दिशा दी, बल्कि महिलाओं की भूमिका को भी समाज में सशक्त बनाया। उन्होंने ऐसे निर्णय लिए जिसमें देश का हित सर्वोपरि था। उन्होंने धार्मिक कट्टरता से बचते हुए एक संतुलित नीति बनाई ताकि देश में शांति बनी रहे। यदि नारी के रूप में एलिजाबेथ दयनीय है, तो शासिका के रूप में स्पृहणीय हैं।

स्वछन्द विलासिनी नारियाँ – जहाँआरा (आलमगीर) : जहाँआरा बेगम, मुगल सम्राट शाहजहाँ और मुमताज महल की सबसे बड़ी बेटी थी। वे एक बुद्धिमान, समझदार और धार्मिक महिला थी। मूलतः जहाँआरा एक विदुषी, बुद्धिमती तथा रूपसी स्त्री थी। उसका स्वभाव स्नेहमय था। उसने अपनी सारी खुशियाँ छोड़कर अपने बीमार पिता की सेवा की। उन्होंने कभी शादी नहीं की ताकि वे पूरी तरह पिता का देखभाल कर सकें। जहाँआरा की नीति कुशलता उसके चरित्र की एक अन्यतम विशेषता है। यौ तो इतनी बड़ी मुगल–सल्तनत की राजनीति में वह सक्रिय भाग लेती ही है, साथही उसे अपने निजी भविष्य की चिंता परेशान किए रहती है। एक और उसे अपने खानदान की प्रतिष्ठा का ध्यान है और दूसरी ओर आन्तरिक आंकाक्षाओं की पूर्ति की लालसा है। इस द्वन्द्व से वह सफलतापूर्वक मुक्ति पाने के लिए वह कूटनीति से काम लेती है। पहले वह बादशहाँ की हर उचित–अनुचित इच्छा पूरी करके प्रसन्न रखना चाहती है, फिर साम्राज्य के भावी उत्तराधिकारी के रूप में दारा का समर्थन करती है, किंतु परिस्थितियाँ उसका साथ नही देती।

शूर्पणखा (वयं रक्षामः) : शूर्पणखा विदुषी एवं भावुक रमणी है, वह विलक्षण व्यक्तित्व की स्वामिनी है। शूर्पणखा विद्युत्हिजीव के प्रति अपने अनुराग को किसी भी मूल्य पर विस्मृत नहीं करना चाहती। शूर्पणखा का विवाह कालकेय दानवों के राजकुमार विद्युव्हिजीव से हुआ था। रावण ने युद्ध में विद्युत्हिजीव को मार डाला था। सूर्पणखा का पति विद्युव्हिजीव एक कालकेय था और रावण ने सारी दुनिया को राक्षस बनाने का प्रण लिया था, परन्तु विद्युव्हिजीव ने उसकी इस बात को मानने से इन्कार कर दिया इसलिए रावण को इसका वध करना पड़ा यह जानते हुए भी कि वह उसकी बहन का पति है।

मेरी स्टुअर्ट (सोना और खून–2) : मेरी स्टुअर्ट स्काटलैंड के जेम्स पंचम की पुत्री थी। रूप और लावण्य की स्वामिनी मेरी स्टुअर्ट की उन्मत विलास–प्रवृत्ति उसके जीवन को विषादमय बना देती है। उनका विवाह फ्रांस के राजकुमार से होता है परन्तु कुछ समय पश्चात वह विधवा हो जाती है। निःसन्तान होने के कारण वह फ्रांस छोड़कर स्कॉटलैंड आ जाती है। स्कॉटलैंड लौटने पर स्कॉटिश रईसों द्वारा किए गए विरोध और नागरिक निर्णयों के कारण उन्हें 1567 में गद्दी छोड़नी पड़ी और वह इंग्लैंड भाग गई। अपनी चचेरी बहन महारानी एलिजावेथ प्रथम के संरक्षण में रहने के बाबजूद, उन्होंने अंग्रेजी सिंहासन के लिए दावा किया, जिससे उन पर एलिजावेथ को अपदस्थ करने की साजिश को आरोप लगा 1587 में उन्हें दोषी ठहराया गया और फाँसी दे दी गई।

दैत्यबाला (वयं रक्षम) : दैत्य राज कन्या दैत्यबाला सार्वजानिक मार्ग के चतुष्पथ पर नाच गाकर नर नाग, देव–दैत्य, असुर–मानुष, आर्य–व्रात्य सभी को विमोहित करती हुई, सबको मनोरजन करती है। उसके लिए रूप और यौवन सुरक्षित रखने की वस्तु नहीं, आनन्द और उपभोग का माध्यम है। वह रावण के प्रेम पाश में ऐसी विवश हो जाती है कि अन्ततः उसके लिये प्राण तक न्यौछावर कर देती है। दैत्यबाला में असाधारण बल है। वह सागर के उत्ताल तरगों में डुबकियाँ खाते हुए निस्सहाय रावण को अपनी भुजाओं में धारण कर तैरती हुई तट पर ले आती है। रावण के प्रति उसका प्रेम बढ़ता जाता है। वह दोनों स्वच्छन्द विचरण करते हुए दानव–क्षेत्र में जा पहुंचते हैं। और बन्दी बना लिए जाते हैं। दानवेन्द्र उन्हें बलि–वेदी में झोंक कर क्षार कर देने का आदेश देता है। इस अवसर पर दैत्यबाला रावण से पूर्व अपनी बलि चढ़ाने का आग्रह करती है और दानवेन्द्र सैनिकों द्वारा खण्ड–खण्ड कर दिए जाने पर भी मुख– मुद्रा पर विषाद की छाया आने नहीं देती।

स्वाभिमानिनी नारियाँ – इच्छनी कुमारी (रक्त की प्यास) : आबू चन्द्रावती के परमार राजा जैत सिंह की इकलौती कन्या इच्छनी कुमारी अपनी वशपरम्परा के अनुरूप एक स्वाभिमानिनी युवती है। उसके व्यक्तित्व में रूप, मार्दव और निश्छल अनुराग के साथ साहस, निर्भीकता और दूरदर्शिता के तत्वों का भी समावेश है। वह पराक्रमी भीमदेव के प्रति आकर्षित होती है। परन्तु उसका भाव किसी स्वछन्द प्रकृति भावुक रमणी की प्रेमक्रीडा नहीं, एक वीर बाला के जीवन की सुरक्षित पूंजी है। उसके पिता दिल्ली सम्राट पृथ्वीराज से उसका वाग्दान कर देते हैं। यहाँ पुनः इच्छनी कुमारी का शील और मर्यादा प्रेम प्रकट होता है। वह अपने अपहरण हेतु, सैनिकों सहित आये हुए कुमार भीमदेव के साथ पाटन जाने से इन्कार कर देती है, क्योंकि 'वह अब वाग्दाता है।' कुमार द्वारा उसे बलात् ले जाने का निश्चय प्रकट करने पर वह अन्ततः वह विवश अबला विनय करती है : महाराज, यदि शौर्य दिखाना है, तो पिताजी को दिखाइए पर यदि मेरा कुछ भी ख्याल है, तो मेरे शील पर कलुष मत लगाइए।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

संयोगिता (पूर्णाहुति) : कन्नौज नरेश जयचन्द की संयोगिता इकलौती पुत्री थीं, जो पृथ्वीराज चौहान के प्रति अपने साहस, प्रेम और दृढ़ता के लिए जानी जाती है। उन्होंने प्रेम के लिए अपने साहस को दर्शाया है। उन्होंने समाज और पिता की आज्ञा का उल्लंघन किया। पृथ्वीराज की मूर्ति को वरमाला पहनाई और स्वयंबर के बीच में से अपने प्रेमी के साथ दिल्ली चली गई। वह एक वीरांगना थी, जिन्होंने प्रेम के लिए सम्मान और स्वाभिमान की मिसाल कायम की। जब युद्ध का समय आया और उन्हें पृथ्वीराज की मृत्यु का पता चला, तो उन्होंने जौहर कर सती होने का मार्ग चुना। यह संयोगिता का चरित्र प्रेम, साहस और स्वाभिमान की एक अद्भुत गाथा है।

जीजाबाई (सह्राद्रि की चट्टाने) : जीजाबाई का चरित्र वीरांगना राजमाता है। एक दिन प्रतापगढ़ दुर्ग के बुर्ज पर खड़ी होने पर जब उसे सिंहगढ़ पर शत्रु का ध्वज फहराता दिखाई देता है, तब वह उसे प्राप्त करने के विचार से शिवाजी को अपने पास बुला भेजती है। किन्तु इस कार्य का स्पष्ट आदेश न देकर वह चतुराई से अपने पुत्र को प्रेरित करती है। वह शिवाजी से चौसर खेलकर, एक दाँव में उसे हराकर जीत की भेंट के रूप में सिंहगढ़ दुर्ग माँग लेती है। शिवाजी द्वारा एक ही दिन में सिंहगढ़ विजय किए जाने के समाचार से उसका मन सन्तुष्ट होता है।

जीजा बाई का चरित्र पुत्र–वत्सला माँ और वीर नारी के रूप में चित्रित हुआ है। उसकी प्रतिज्ञा है कि सुख–दुख में हमेशा पुत्र के साथ रहेंगी। एक बार शिवाजी औरंगजेब की छल–नीति का शिकार होकर बन्दी बनाए जानेपर उसका ह्रदय तड़प उठता है। ईश्वर की अपार कृपा और शक्ति पर उसे पूर्ण आस्था है। इसी कारण उसका ह्रदय क्षणिक स्थितिवश अधीर होते हुए भी असन्तुलित नहीं होता।

पीड़ित नारियाँ – कमलावती (बिना चिराग का शहर) : कमलावती का नारीत्व कायर और अफीमची पति के संसर्ग में अतृप्त रह जाता है। यही कारण है कि अलाउद्दीन के सेनापति मलिक कफूर का आक्रमण होने पर जब उसका पति अपनी युवा पुत्री देवलदेवी सहित देवगिरि के राजा रामचन्द्र की शरण में जाने लगता है। तब वह उसका साथ न देकर वही रह जाती है। परिणामस्वरूप, मलिक काफूर उसे अपहरण कर, अलाउद्दीन को उपहार रूप में भेंट कर देता है। कमलावती की हिंसा की पराकाष्ठा उस समय दिखाई देती है। जब उसकी प्रेरणा से मलिक काफर उसकी पुत्री देवलदेवी का अपहरण करने के उद्देश्य से, देवगिरी पर आक्रमण करके राजा की जीते–जी खाल खिंचवा डालता है। इस प्रकार कमलावती का चरित्र उसके अतृप्त नारीत्व की प्रतिहिंसा का निर्देशन है।

मल्लिका एवं नन्दिनी (वैशाली की नगरवधू) : ये दोनों कौशलनरेश प्रसेनजित की राजमहिषियां, कलिंगसेना की सपत्नियाँ और पुरुष की कामुकता की साक्षात् प्रमाण है। दोनों हीनजाति की कन्याएँ है, अपने रूप और गुण के कारण प्रसेनजित् द्वारा ये बलात् अन्तःपुर मे लाई जाती है। दोनों सामान्यतः पति–परायणा, उदार और स्वाभिमानिनी नारियाँ हैं। किन्तु दोनों का कर्मपथ भिन्न है। मल्लिका भाग्य की विडम्बना को शान्त भाव से सहन करती हुई परलोक सिधार जाती है। नन्दिनी पति के अन्याय का प्रतिकार, अपने पुत्र विदूडभ को छल–बल द्वारा राज्य दिला कर लेती है।

मंजुघोषा (देवांगना) : यह वज्रतारा देवी के मंदिर की देवदासी है। इसी से मानों सभी प्रकार के दुख के द्वार उसके लिए खुल गए हैं। उसे अपने शरीर और प्राणों पर अधिकार नहीं। सुन्दर मंजुघोषा का मन सात्विक प्रेम पाने को लालायित है। सेठ धनंजय के तरुण पुत्र दिवोदास को भिक्षुक रूप में मन्दिर के प्रांगण में पाकर वह अनायास उस पर मुग्ध हो उठती है। प्रथम भेंट में ही वह श्रेष्ठि–पुत्र दिवोदास को पति रूप में वरण कर लेती है। मंजुघोषा साहस की मूर्ति है। दिवोदास से प्रेम करने के अपराध में काशीराज मे पार्वत दुर्ग में बन्दी बनाए जाने पर वह चालाकी से अपनी सखी को अपने स्थान पर नियुक्त कर वहाँ से निकल भागती है। वह धैर्य से वन प्रदेश में भटकती हुयी कई दिन व्यतीत करती है, वह विलक्षण है। अन्त में आश्चर्यजनक ढंग से देवी की मूर्ति से प्रकट होकर कदाचारी दुष्टो का भंडाफोड़ करती है।

कुदसिया बेगम (सोना और खून) : बादशाह नसीरुद्दीन हैदर की पत्नी कुदसिया वेगम के चरित्र की हल्की सी झलक उपन्यास में मिलती है। प्रथमतः कुदसिया बेगम सौभाग्य–शालिनी पत्नी और माँ के रूप में उपस्थित होती है। पुत्र–जन्मोत्सव के रूप में मनाये जाने वाले भव्य समारोह की सामान्य घटना उसके लिए अभिशाप बन गयी और वह आत्महत्या करके मर्यादा बचा पाती है।

योद्धा नारियाँ – मंगला (सोना और खून, प्र० भा०) : मंगला अठारहवी शताब्दी के उत्तर भारत के महान् संगठनकारी चौधरी प्राणनाथ की पोती है। यह सुशिक्षिता, मर्यादामयी और वीरबाला है। जब चौधरी प्राणनाथ अंग्रेजो द्वारा मुक्तेश्वर दुर्ग में घेर लिए जाते हैं। तब उनके सबसे छोटे पुत्र (सुखपाल) अन्य सभी स्त्रियां मेरठ भिजवा दी जाती है। किन्तु मंगला किसी भी स्थिति में दादा को छोड़कर नही जाती है। वह कुछ सिंहनी की भाँति शस्त्र – सन्नद्ध होकर अंग्रेजो के विरुद्ध मोर्चा संभाल लेती हैं। अंग्रेजो की भारी तोपो से लेस सेना और मुन्तेश्वर के आत्म–बलिदानो युवकों के मध्य दिन भर के भीषण संग्राम के पश्चात जब चौधरी प्राणनाथ परिस्थितियों के प्रतिकूल देखकर आत्म सर्मपण कर देता है। तब अन्य योद्धा भी उसका अनुसरण करते हैं। किन्तु मंगला गिरफ्तार होने से इंकार कर देती है। वह पिस्तौल हाथ में लेकर गरजती हुयी अंग्रेजी में सरकारी लोगो को चेतावनी देती है "जो मेरे ऊपर हाथ डालेगा, मैं उसे गोली मार दूंगी। वह अपने बाप दादा की जलती हुई हवेली के द्वार पर अंग्रेजो का मार्ग रोककर, पिस्तौल ताने खड़ी हो जाती है। अन्त में अंग्रेज मजिस्ट्रेट उस पर तोप दागने का आदेश दे देता है। और उसके कोमल अंग प्रत्यंग टुकड़े होकर हवा में उड़ जाते हैं।

लक्ष्मीबाई (सोना और खून, चर्तुथ भाग) : रानी लक्ष्मीबाई बचपन से ही मल्लविद्या, घुड़सवारी और शास्त्रविद्याओं में निपुण थी। वीरांगना महारानी लक्ष्मी भारतीय इतिहास की एक गौरवमयी विभूति एक प्रेरक अध्याय है। उनका नाम आज भी अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करने वालों के ह्रदय में एक नवीन उत्साह का संचार कर देता है। एक समान्य ब्राह्मण कुल में पैदा होकर रानी लक्ष्मीबाई अपने जीवन के 19 वें वर्ष में ही विधवा हो गई थीद्य तद्पश्चात राजकाज संभालते हुए अंग्रेजो द्वारा झाँसी के अंग्रेजी राज्य में विलय होने की घोषणा के विरुद्ध उन्होंने अपनी झाँसी की रक्षा के लिए एक वीरांगना की तरह अपनी तलवार उठा ली। उन्होंने जिस अभूतपूर्व धैर्य, साहस और वीरता का प्रमाण प्रस्तुत कर अंग्रेजी सेना के दाँत खट्टे कर दिये, वह अद्वितीय है। एक श्रेष्ठ वीरांगना और योग्य सेनानायक के रूप में अपने प्रबल पराक्रम को सार्थक करती हुई रानी लक्ष्मीबाई मात्र 22 वर्ष की उम्र में वीरगति को प्राप्त हुई। आचार्य चतुरसेन ने उसके चरित्र में आत्मोत्सर्ग तथा बलिदान के आसाधारण तत्व संजोए हैं। उसके बलिदान स्वरूप पूरे भारत में क्रान्ति की लहर दौड़ गई।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

निष्कर्ष – आचार्य चतुरसेन के प्रायः सभी उपन्यासों का केन्द्र बिन्दु नारी है। प्रत्येक उपन्यास में किसी न किसी नारी समस्या का विवेचन घटनाओं अथवा पात्रों के माध्यम से हुआ है। यह विवेचन प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों प्रकार का है। प्रत्यक्ष वहाँ है, जहाँ किसी उपन्यास का कोई एक अथवा एकाधिक नारी पात्र किसी ऐसी समस्या से सीधे संबंधित है, जिनका विवेचन करना उपन्यासकार का लक्ष्य है। आचार्य जी का नारी संबंधी चिन्तन व्यापक है। उनके उपन्यासों में उसकी अभिव्यक्ति अनायास किसी न किसी प्रसंग में हो गयी है। ऐसे नारी विषयक विचार उनके उपन्यासों में बिखरे हैं। चतुरसेन ने नारी चित्रण में चरित्र–चित्रण की प्रचलित सभी प्रमुख शैलियों का यथावसर प्रयोग किया है। वैसे उनके अधिकांश उपन्यासों में नारीपात्र वर्णनात्मक शैली के माध्यम से चित्रित हुए है। कई नारी पात्र नाटकीय शैली द्वारा भी चित्रित हैं। जैसे : सुधा (आत्मदाह), नीलमणि (नीलमणि), अम्बपाली (वैशाली कीनगर वधु), मंजुघोषा (देवांगना), राज (अपराजिता) और चौला (सोमनाथ) आदि।

(आधार) – सदर्भ ग्रन्थ सूची

आचार्य चतुरसेन के उपन्यास

1. अपराधी – सुमन पॉकेट बुक्स लि०. दिल्ली।
2. आलमगीर – हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।
3. खून और खून – नवयुग प्रकाशन, दिल्ली।
4. गोली – राजहंस प्रकाशन, दिल्ली।
5. देवांगना – सुबोध पाकेट बुक्स, दिल्ली।
6. नरमेध – सुबोध पाकेट बुक्स, दिल्ली।
7. पूर्णाहुति – जय प्रकाशन, वाराणसी।
8. मोती – हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली।
9. वयं रक्षामः – राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
10. वैशाली की नगरवधु – चतुरसेन साहित्य, दिल्ली।

सहायक ग्रन्थ

1. उपन्यासकार चतुरसेन शास्त्री – डॉ० इन्दु वशिष्ठ – पृ०सं० 42.
2. हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव एवं विकास – डॉ० सुरेश सिन्हा – पृ० सं० 40 साप्ताहिक हिन्दी– 6 मार्च 1960.
3. सोना और खून – आचार्य चतुरसेन – पृ०सं० 249.

*****